नि:शुल्क उपचार द्वारा शारीरिक स्वास्थ्य एवं आध्यात्मिक शिक्षा द्वारा चरित्र निर्माण प्रदान करने हेतु, संस्था द्वारा संचालित किये जाने वाले सांइन्टिफिक एवं सोशल रिसर्च कार्यक्रम का संक्षिप्त विवरण

किसी भी देश और समाज की सच्ची उन्नति तभी संभव है, जब वहाँ के निवासी शारीरिक एवं चारित्रिक रूप से पूर्णतया स्वस्थ हों। संस्था द्वारा पिछड़े ग्रामीण क्षेत्रों में रहने वाले गरीब जन समुदाय को नि:शुल्क उपचार द्वारा शारीरिक स्वास्थ्य एवं आध्यात्मिक शिक्षा से चरित्र निर्माण प्रदान करने हेतु साइन्टिफिक एवं सोशल रिसर्च कार्यक्रम का संचालन निर्धारित किया गया है।

संस्था द्वारा विगत लगभग 25 वर्षों से भारत सरकार, उत्तर प्रदेश सरकार एवं जन सहयोग से विभिन्न समाज सेवी कार्यक्रमों के संचालन के साथ–साथ साइन्टिफिक एवं सामाजिक रिसर्च का कार्य किया जा रहा है। क्षेत्र की आवश्यकता के अनुरूप संस्था द्वारा स्वास्थ्य सेवायें, प्रोढ़ शिक्षा, और तकनीकी शिक्षा, व्यवहारिक एवं नैतिक शिक्षा सामाजिक उत्थान हेतु व्यक्तित्व विकास, स्व प्रबन्धन, पर्यावरण, जागरूकता, क्षेत्रीय उपलब्धता के आधार से सामूहिक रूप से स्व–रोजगार स्थापित कराने, मान्सिक मान्दितों तथा किशोर–किशोरियों के विकास एवं अधिकारिता एवं पीड़ित महिलाओं के लिये परिवार परामर्श केन्द्र के माध्यम से मनो वैज्ञानिक काउन्सिलिंग द्वारा परिवारों में शान्ति स्थापित करने के कार्यक्रम संचालित किये जा रहे हैं। इन सभी कार्यक्रमों के माध्यम से मानव को शारीरिक स्वास्थ्य एवं सामाजिक, आर्थिक उन्नति प्रदान कर समाज को नव–निर्माण की धारा से जोड़ने का रिसर्च कार्य किया जा रहा है। जिसके विभिन्न निम्न सूक्ष्म पहलू निम्नानुसार हैं :–

एलोपैथिक दवाओं के प्रयोग के साथ–साथ औषधीय पौधों पर शोध के उपरान्त गुणवत्तापरक आयुर्वेदिक जड़ी–बूटियों का निर्माण करना ।

आज देश में एलोपैथिक दवाओं के बढ़ते हुये मूल्यों के कारण एलोपैथिक पद्धति से इलाज गरीब एवं साधारण मनुष्य के लिये दुर्लभ होता जा रहा है। अतः संस्था द्वारा आयुर्वेदिक जड़ी–बूटियों के माध्यम से इलाज उपलब्ध कराने की योजना का क्रियान्वयन किया जा रहा है। गरीबों के लिये आयुर्वेद पद्धति से नि:शुल्क उपचार की भी योजना चल रही है। गरीबों को नि:शुल्क सुविधा प्रदान करने के संस्था के उद्देश्य की पूर्ति हेतु भारत सरकार, वित्त मन्त्रालय, आयकर विभाग द्वारा आयकर एक्ट 1961 के सेक्सन 12 **A** एवं 80 **G** के अन्तर्गत भी पंजीकृत किया गया है। तथा गृह मन्त्रालय द्वारा **FCRA** के अन्तर्गत भी पंजीकृत किया गया है।

संस्था द्वारा कुछ विशिष्ट औषधीय पौधों को शोध कार्य के लिये चुना गया है। संस्था द्वारा औषधीय पौधों की खेती पर रिसर्च कार्य हेतु आयुर्वेद के क्षेत्र में मर्मज्ञ विषय विशेषज्ञों की कमेटी बनाई गई है। कमेटी के सभी सदस्य, पर्यवेक्षण, परामर्श एवं उगाये जाने वाले औषधीय पौधों की गुणवत्ता को बढ़ाने के शोध कार्य में सहयोग प्रदान करते हैं। संस्था के प्रबन्ध समिति के सदस्य भी निरन्तर सहयोगी एवं सेवारत हैं।

संस्था का मुख्य उद्देश्य यह है कि शोध के उपरान्त अत्यधिक प्रभावशाली औषधि पौधों का उत्पादन कराया जाये तथा एक वृहदतम शोध केन्द्र की स्थापना भी की जाये। क्षेत्रीय गरीब रोगियों को निःशुल्क एलोपैथिक के साथ–साथ आयुर्वेद चिकित्सा उपलब्ध कराई जावे। एक ऐसे शोध केन्द्र की स्थापना की जायेगी, जहाँ गुणवत्तापूर्ण आयुर्वेदिक जाड़ी–बूटियों के उत्पादन, विलुप्त हो रही जड़ी–बूटियों के उत्पादन के साथ–साथ जटिल रोगों के ऊपर भी ऐसी रिसर्च की जाये कि आयुर्वेदिक जड़ी–बूटियों से ही रोगों को जड़ से समाप्त किया जा सके। संस्था के शोध केन्द्र के संचालन में सहयोग प्राप्ति हेतु देश की प्रमुख जड़ी बूटियों, रिसर्च इन्स्टीट्यूट/इम्पोर्टर, बीज/प्लांटिंग मैटेरियल के प्रदायकर्ता प्रमुख खरीददार/व्यापारी तथा एक्सपोर्टर संस्था के संज्ञान में हैं।

संस्था द्वारा औषधीय पौधों की खेती के लिये कुछ क्षेत्रीय कृषकों को शोध केन्द्र से सम्बद्ध किया गया है तथा उन्हें प्रशिक्षित भी किया गया है। क्षेत्रीय कृषक अभी तक मुख्यतः सामान्य खेती करते आ रहे हैं, जिसमें अधिक लाभ नहीं होता। अधिकाँश खेती में नुकसान भी हो जाता है। औषधीय पौधों की खेती से क्षेत्रीय कृषकों को कई गुना अधिक लाभ होगा, उनकी सामाजिक एवं आर्थिक उन्नति भी होगी। संस्था द्वारा साइन्टिफिक एवं सोशल दोनों ही प्रकार की रिसर्च का कार्य किया जा रहा है। स्वास्थ्य के क्षेत्र में किये जा रहे उपरोक्त विवरण के साइन्टिफिक शोध के साथ–साथ निम्न क्षेंत्रों में सामाजिक शोध के कार्यक्रम सम्पन्न किये जा रहे हैं।

प्रौढ़ शिक्षा केन्द्रों के संचालन के माध्यम से निरक्षरों को साक्षर बनाने के साथ–साथ निरक्षरता के कारण उनके मन में बस गई हीन भावना को भी मनोवैज्ञानिक तरीके से दूर किया गया। ग्रामीणों को शुद्ध जल की उपलब्धता कराने के साथ–साथ जल की एक–एक बूँद को प्रयोग करने की तकनीक बताई गई।

परिवार कल्याण केन्द्र, प्रजनन एवं बाल स्वास्थ्य कार्यक्रम के माध्यम से सीमित परिवार बनाने के साथ–साथ संस्कारित परिवार बनाने की भी जानकारी प्रदान की जा रही है। गरीब, पिछले परिवारों की महिलाओं एवं युवाओं को विभिन्न ट्रेडों का प्रशिक्षण प्रदान किया गया, जिससे उनको आर्थिक उन्नति के अवसर तो प्राप्त हुये ही, साथ ही साथ स्व–प्रबन्धन, व्यक्तित्व विकास, व्यावसायिक कौशल एवं राष्ट्रीय एकता

की भावनाओं का भी समावेश किया गया। संस्था द्वारा संचालित किये जा रहे परिवार परामर्श केन्द्र के माध्यम से पारिवारिक विवादों को मनोवैज्ञानिक तरीके से निपटाया जाता है। इसके लिये मनोवैज्ञानिक विषय से पोस्ट ग्रेजुएट दो काउन्सलर नियुक्त हैं, जो कि परिवारों में आपसी प्रेम, सौहार्दपूर्ण शान्त वातावरण का निर्माण करने के साथ–साथ मानव मन में विभिन्न परिस्थितियों से उत्पन्न होने वाले विरोध एवं वैमनस्यता के विचारों के कारणों पर रिसर्च भी करती हैं, जिससे परिवारों में विद्रोह उत्पन्न होने से पहले ही भावात्मक उपचार प्रारम्भ कर दिया जाये। इसके लिये संस्था द्वारा महिला जागरूकता शिविर एवं सामुदायिक जागरूकता शिविरों का आयोजन किया जा रहा है। संस्था को सामाजिक शोध (सोशल रिसर्च) के कार्यक्रमों में संलग्न होने के कारण ही राज्यपाल (गर्वनर), उ0 प्र0 शासन द्वारा सर्विस प्रोवाइडर नियुक्त किया गया है। संस्था द्वारा मानसिक मान्दितों, विकलांगों के विकास के लिये भी विभिन्न शोध किये जा रहे हैं। इसके लिये संस्था को भारत सरकार सामाजिक न्याय एवं अधिकारिता मन्त्रालय के नेशनल ट्रस्ट द्वारा पंजीकृत किया गया है एवं जिलाधिकारी, फर्रुखाबाद एवं मैनपुरी की अध्यक्षता में गठित तीन सदस्यीय लोकल लेबिल कमेटी में भी मनोनीत किया गया है तथा निदेशालय विकलांग कल्याण उ0 प्र0 द्वारा भी पंजीकृत किया गया है।

संस्था द्वारा किशोरों के विकास एवं अधिकारिता हेतु कार्यक्रम संचालित किये जा रहे हैं, जिसके अन्तर्गत किशोरावस्था में मन में उत्पन्न होने वाले विचारों के विचलन पर शोध कर उन्हें परिवार के दायित्व से अवगत कराने, आदर्श, चरित्रवान नागरिक बनने की शिक्षा प्रदान की जा रही है। युवाओं को देश के अलग–अलग प्रान्तों की कला एवं संस्कृति की जानकारी प्रदान कराने एवं परिचय कराने के उद्देश्य से विभिन्न प्रान्तों के युवाओं को सम्मिलित कर राष्ट्रीय एकता शिविर का आयोजन किया गया है।

संस्था द्वारा भारत सरकार एवं क्षेत्रीय जन सहयोग से, जो उपरोक्त वर्णित साइन्टिफिक एवं सोशल रिसर्च का कार्य किया जा रहा है, उसे संस्था अब विस्तृत रूप में जन सेवार्थ विकसित करना चाहती है। संस्था की आगामी योजना के अन्तर्गत देश के उपयुक्त वांछित औषधीय पौधों का उत्पादन एवं जड़ी–बूटियों से उपचार, शोध केन्द्र एवं विभिन्न सामाजिक विधाओं/क्रिया–कलापों का शोध केन्द्र स्थापित करना है, जो कि जन सहयोग से ही संभव है।

शान्ती समाज सेवी समिति

2/377 खतराना स्ट्रीट, फर्रुखाबाद (उ0 प्र0)

साइन्टिफिक एवं सोशल रिसर्च की आवश्यकता (औचित्य)

भारतवर्ष में विभिन्न कारणों से बढ़ते हुये प्रदूषण की बजह से यहाँ के लोग तरह–तरह की बीमारियों से ग्रसित होते जा रहे हैं। हाई ब्लड प्रेशर, डाइविटीज, हार्ट अटेक, मानसिक तनाव अधिकाँश लोगों को पीड़ित कर रहे हैं। इन सबका कारण जल प्रदूषण, वायु प्रदूषण, ध्वनि प्रदूषण के साथ–साथ मानसिक प्रदूषण भी है। खाद्यानों में अति उर्वरक एवं विषैले कीटनाशकों के प्रयोग नई–नई बीमारियों को जन्म दे रहे हैं। मानसिक प्रदूषण के कारण समाज में विघटन, विद्वेष की भावना एवं पारिवारिक सम्बन्धों में कटुता बढ़ती जा रही है। उपरोक्त विषम समस्याओं को समूल समाप्त करने के लिये हमारी संस्था द्वारा साइन्टिफिक एवं सोशल रिसर्च का कार्य प्रारम्भ किया गया है। संचालित कार्यक्रम की गतिविधियों के मुख्य बिन्दु निम्नवत् हैं।

साइन्टिफिक रिसर्च कार्यक्रम

✦ एलोपैथिक दवाइयों की बढ़ती हुई कीमतें एवं बढ़े–बढ़े नर्सिंग होम, हास्पिटलों के अति मंहगे इलाज आम आदमी को सही उपचार प्राप्त करने से बंचित कर रहे हैं। भारतवर्ष की लगभग 70 प्रतिशत जनसंख्या गाँव में निवास करती है। इनमें से भी अधिकाँश आर्थिक स्थिति से अत्यन्त कमजोर हैं। गाँव में चिकित्सीय सुविधा भी बहुत कम है। ऐसे गरीबों के लिये गाँव से शहर आकर इलाज कराना असंभव होता जा रहा है। परिणामतः गरीब लोग छोटी–मोटी बीमारियों का इलाज भी नहीं कराते, जिससे उनकी शारीरिक क्षमता घटती जाती है और एक दिन वही बीमारी बड़ा रूप लेकर उनका जीवन ही समाप्त कर देती है।

✦ देश में उत्पन्न हो रही उपरोक्त जटिल समस्या के निदान हेतु हमारी संस्था द्वारा एलोपैथी के साथ–साथ प्राचीन भारतीय आयुर्वेदिक चिकित्सा पद्धति के माध्यम से गरीबों को आरोग्यता प्रदान करने का कार्य प्रारम्भ किया गया है, किन्तु इन पर अत्यन्त शोध की भी आवश्यकता है। कुछ जड़ी–बूटियाँ विलुप्तता की कगार पर हैं। कुछ जड़ी–बूटियों की जानकारी/पहचान न होने के कारण पैदा होने के बाद ही नष्ट हो जाती हैं। या उन्हें घास–फूस के रूप में जानवरों को खिला दिया जाता है। आवश्यकता के अनुरूप जड़ी–बूटियों की उपलब्धता बहुत कम है। कम भूमिधारक कृषकों को सामान्य फसलों की खेती से पर्याप्त लाभ नहीं हो पाता है। अतः उन्हें औषधीय पौधों/जड़ी–बूटियों की खेती का तकनीकी प्रशिक्षण देकर औषधीय पौधों की खेती प्रारम्भ करायी जायेगी, तो इनको कई गुना अधिक लाभ प्राप्त होगा, जससे उनकी आर्थिक स्थिति सुदृढ़ होगी तथा गरीब रोगियों को सस्ता इलाज उपलब्ध कराने हेतु जड़ी–बूटियों, आयुर्वेदिक औषधियों की देश में उपलब्धता बढ़ेगी।

जड़ी–बूटियों के शोधन एवं रोगों पर औषधियों के प्रभावी असर हेतु रिसर्च सेन्टर का संचालन भी अत्यन्त आवश्यक है क्योंकि विभिन्न प्रकार के प्रदूषणों, ग्लोबल बार्मिंग के कारण अधिकाँश जड़ी–बूटियों की गुणवत्ता बढ़ाने के लिये आयुर्वेद के मर्मज्ञ, विषय विशेषज्ञ, विद्वान, वैज्ञानिकों के सहयोग, परामर्श से शोध का कार्य भी किया जा रहा है। संस्था द्वारा देश में आयुर्वेदिक जड़ी–बूटियों की उपलब्धता एवं औषधीय पौधों की खेती हेतु उपयुक्त क्षेत्रों में उत्पादन एवं शोध केन्द्रों का विस्तार किया जायेगा तथा विभिन्न स्थानों र निःशुल्क एवं अल्प शुल्क वाले चिकित्सा केन्द्र लोक सहयोग से खोले जायेंगे।

सोशल रिसर्च कार्यक्रम

परिवार की आवश्यकताओं की पूर्ति न कर पाने, धूम्रपान, नशीली वस्तुओं के सेवन, बेरोजगारी, कामनाओं, लालसाओं की हवश की पूर्ति हेतु दिन भर की भागमभाग की जिन्दगी से परेशान, मँहगी शिक्षा, भविष्य, लक्ष्य की प्राप्ति के पूर्ण होने के प्रति आश्वस्त न होने से भयभीत, अश्लील साहित्य, अश्लील सिनेमा से भ्रमित होने के कारण समाज के सभी वर्ग के लोग तनावग्रस्त होकर मानसिक प्रदूषण का शिकार होते चले जा रहे है, जिसके कारण आक्रोश की भावनाओं की उत्पत्ति होने लगती और इसके परिणाम स्वरूप गृह कलह बढ़ती जा रही है। सामाजिक जीवन में एक दूसरे के प्रति प्रेमपूर्ण आपसी सौहार्द के सम्बन्ध समाप्त होते जा रहे हैं। सम्बन्धों में मधुरता कम होती जा रही है। औपचारिकता होने के कारण सारहीन मनोरंजन में लोग मन की शान्ति ढूँढ़ रहे हैं। वसुधैव कुटुम्बकम की बात मात्र शब्दों तक ही सीमित होती जा रही है। सब के बीच रहते हुये भी लोग एकाकीपन महसूस कर रहे हैं। परिवारों में वैचारिक मतभेद होने के कारण पति–पत्नी के झगड़े, घर के बुजुर्गो के प्रति तिरस्कार बढ़ते जा रहे हैं। इससे परिवार के बच्चों में निराशा और भय की उत्पत्ति होती जा रही है। बच्चों को माँ–बाप से सच्चा प्यार और अनुभव वृद्धि हेतु वार्तालाप के लिये समय न मिलने के कारण किशोरावस्था से ही उनमें हीनता की भावना बढ़ती जा रही है, जिससे उनका समुचित विकास नहीं हो पा रहा है। किशोरों को जीवन के एक चरण के रूप में माना जाता है, जिसकी पहिचान द्रुत शारीरिक वृद्धि एवं विकास, सामाजिक तथा मनोवैज्ञानिक परिवर्तनों, प्रौढ़ मानसिक प्रक्रियाओं के विकास तथा संगत स्वतन्त्रता हेतु सामाजिक, आर्थिक निर्भरता से संक्रमण द्वारा की जाती है। किशोरों को प्रायः उन लोगों के समूह के रूप में माना गया है, जिनके पास समस्यायें और व्यवधान होते हैं और उनमें विद्रोह की भावना होती है। तथापि यह किशोरों की विशेषताओं का नकारात्मक पक्ष है। वास्तविकता यह है कि किशोरों की बहुत विशेषतया विचित्र जरूरतें होती हैं, जिन्हें पता लगाने तथा पूरा करने की जरूरत है। सकारात्मक उत्तेजना तथा अनुकूल पर्यावरण की जलवायु देने से किशोर समाज के स्वास्थ्य तथा जिम्मेदार सदस्य के रूप में विकसित हो सकते हैं। यदि उन में आदर्शवाद की भावना भरी जाये तथा सही योजना पर्यावरण और कार्य प्रशिक्षण उपलब्ध कराये जायें तो यह सामाजिक परिवर्तन तथा राष्ट्रीय पुनर्निर्माण के लिये एक इन्जन हो सकते हैं।

मनोवैज्ञानिक परामर्श के क्षेत्र में साहित्य की समीक्षा यह दर्शाती है कि किशोरों में सामान्य समस्यायें 7 प्रकार की हैं। नामः (1) शारीरिक/स्वास्थ्य सम्बन्धी (भोजन एवं पोषण, साइकोसोमेटिक बीमारियाँ, सामान्य स्वास्थ्य, शारीरिक अभ्यास इत्यादि) (2) परिवार सम्बन्धी (समझ, परिवार के अन्दर बाँटना तथा सुरक्षा) (3) वित्तीय (शिक्षा, स्वास्थ्य, मनोरंजन आदि की लागत) (4) मनौवैज्ञानिक (व्याकुलता, विश्वास की कमी, चिन्ता आदि) (5) सामाजिक (मित्रता, मित्रों/अध्यापकों के साथ सम्बन्ध बाँटना, यौन जनित अभियानों का सामना करना) (6) भावात्मक (गुस्सा आक्रमण, अवसाद, अकेलापन, असुरक्षा तथा अपराधीपन महसूस करना) (7) शैक्षणिक (एकाग्रता, समय प्रबन्ध, परीक्षा भय, स्मरण शक्ति, अध्ययन की आदत)

युवावस्था तक आते–आते भारत के कर्णधार अधिकाँश युवा अनेक व्यसनों एवं दूषित मानसिकता से ग्रसित होते जा रहे हैं, जिसके कारण समाज में उग्रवाद, हिंसात्मक आन्दोलन बढ़ते जा रहे हैं। दूषित मानसिकता के लोग युवाओं में विद्यमान शक्ति का दुरूपयोग कर समाज में धर्मभेद, जातिभेद का जहर घोल कर देश की एकता और अखण्डता को समाप्त करने का प्रयास कर रहे हैं। इससे देश के नागरिकों में सुरक्षा की भावना दुर्बल होती जा रही है। वेअन्त समस्याओं की उत्पत्ति से पुलिस सुरक्षा व्यवस्था के भी जर्जर होने का खतरा बढ़ता जा रहा है।

समाज में व्याप्त उपरोक्त जटिल समस्याओं के आकलन के उपरान्त संस्था द्वारा इन्हें समूल नष्ट करने के उद्देश्य से सोशल रिसर्च (सामाजिक शोध) कार्यक्रम प्रारम्भ किया गया है क्योंकि भावनाओं एवं मानसिक रूप से उत्पन्न हो रही समस्याओं को मनोवैज्ञानिक तरीके से ही समाप्त किया जा सकता है। चूँकि इन समस्याओं का उद्‌गम मानव मन से हो रहा है, अतः मनोवैज्ञानिक तरीके से शोध के उपरान्त विभिन्न सकारात्मक कार्यक्रम संचालित करके मानव मन से ही इन्हें समाप्त करना एकमात्र उपाय है। शोध के उपरान्त पाया गया है कि मन की चिन्तन गति को रोका तो नहीं जा सकता है किन्तु उसकी दिशा को नकारात्मकता से सकारात्मकता की ओर मोड़ा जा सकता है।

सोशल रिसर्च कार्यक्रम की आगामी योजना के अन्तर्गत संस्था द्वारा निर्धारित किया गया है कि देश के विभिन्न क्षेत्रों में, प्राथमिकता के स्तर पर उन क्षेत्रों में जहाँ जातीय हिंसा, उग्रवाद, आतंकवाद, भेदभाव, अलगाववाद बढ़ रहा है । आदिवासी अथवा अति गरीबी से ग्रसित हैं, वहाँ "व्यक्तित्व विकास अनुभूति केन्द्र " खोले जायें। इन केन्द्रों के माध्यम से आसपास के क्षेत्र का सामाजिक सर्वेक्षण किया जायेगा जिससे कि उस क्षेत्र में पनप रही बुराई के कारणों का आंकलन किया जा सके। फिर मनोवैज्ञानिक तरीके से उन्हें दूर करने हेतु उस क्षेत्र के विभिन्न वर्गों जैसे महिलाओं, युवाओं, किशोरों, बुजुर्गों, बच्चों, शिक्षा क्षेत्र, स्वास्थ्य क्षेत्र, पुलिस प्रशासन एवं विभिन्न व्यवसाय से सम्बद्ध लोगों को अलग–अलग ग्रुप में एकत्रित कर उनके लिये वर्कशाप/कार्यशालाओं एवं प्रशिक्षण कार्यक्रमों का आयोजन किया जाये,

जिनके माध्यम से उनकी अपेक्षाओं को जानकर सही हल सुझाया जा सके। प्रेम और सौहार्द स्थापित करने के लिये सभी वर्गों के एक साथ सम्मेलन भी आयोजित किये जायेंगे। "व्यक्तित्व विकास अनुभूति केन्द्र" प्रतिदिन नियमित आने वाले लोगों को भी मनोवैज्ञानिक परामर्श देता रहेगा। इसके लिये संस्था द्वारा अनुभवी विषय विशेषज्ञों, मनोवैज्ञानिकों, शिक्षाविदों, समाजशास्त्रियों, तकनीकी कौशल विशेषज्ञों को सम्बद्ध किया जायेगा। तथा देश–विदेश की विभिन्न क्षेत्रों में प्रख्यात हस्तियों, राष्ट्रीय पुरस्कार, पदक प्राप्त अनुभवों को भी आमन्त्रित किया जायेगा।

संस्था को विश्वास है कि इस प्रकार के कार्यक्रमों के संचालन से भारतवर्ष में सुख–शान्ति स्थापित होगी, तथा देश का गौरव सारे विश्व में बढ़ेगा। भारतवर्ष संसार के लिये फिर से प्रेरणास्रोत बन जायेगा। यह विशाल कार्य लोक सहयोग से ही सम्भव है।

(मुरलीधर गौड़)

प्रस्तावित कार्य योजना साइन्टिफिक एवं सोशल रिसर्च कार्यक्रम

संस्था द्वारा निर्धारित किया गया है कि साइन्टिफिक एवं सोशल रिसर्च कार्यक्रम के अन्तर्गत प्रथम चरण में संस्था द्वारा उत्तर प्रदेश में औषधीय पौधों की खेती एवं भारतीय चिकित्सा पद्धति हास्पिटल रिसर्च सेन्टर तथा व्यक्तित्व विकास अनुभूति शोध केन्द्र स्थापित किया जायेगा, जिसमें प्रयोगशाला, उपचार कक्ष, आई0 सी0 यू0, ओ0 टी0, आयुर्वेदिक औषधियों के शोध कक्ष, सेनीटोरियम, योग एवं आध्यात्मिक चर्चा कक्ष, खेल–कूद एवं व्यायाम के लिये उपयुक्त कक्ष एवं ओपन लान बनाये जायेंगे।

जड़ी–बूटियों के शोधन का कार्य प्रमुख रूप से मुख्यालय पर स्थापित केन्द्र पर ही किया जायेगा। केन्द्र पर मरीजों को भर्ती करके उपचार करने एवं ओ0 पी0 डी0 द्वारा भी उपचारित करने की सेवायें प्रदान की जायेंगी। विभिन्न रोगों पर जड़ी–बूटियों के माध्यम से आरोग्यता प्रदान करने का शोध कार्य लगातार चलता रहेगा। समय–समय पर मुख्यालय पर देश–विदेश के आयुर्वेद मर्मज्ञ विद्वानों, डाक्टरों एवं वैज्ञानिकों को आमन्त्रित कर वर्कशाप, सेमिनार एवं सम्मेलनों का आयोजन किया जाता रहेगा। इसी प्रकार जन समुदाय को व्यक्तित्व विकास एवं आध्यात्मिक अनुभूति प्रदान करने के उद्देश्य से निरन्तर विशेषज्ञों की कक्षाओं एवं सम्मेलनों का आयोजन किया जाता रहेगा।

भारतवर्ष के नव निर्माण में महत्वपूर्ण सहयोग प्रदान करने के उद्देश्य से संस्था द्वारा स्थापित किये जाने वाले शोध केन्द्र के माध्यम से आयुर्वेदिक चिकित्सा द्वारा निःशुल्क अथवा अल्प शुल्क में आरोग्यता प्रदान करना, भारतीय चिकित्सा पद्धति का प्रचार–प्रसार करना, गुणवत्तापरक औषधियों का निर्माण करना तथा समाज में नैतिक एवं आध्यात्मिक जागृति लाने सम्बन्धी क्रिया–कलाप सम्पन्न किये जायेंगे। इसके लिये समाज के भिन्न–भिन्न वर्गों को अलग–अलग एकत्रित कर उनकी भावनाओं को जानकर मनोवैज्ञानिक पद्धति से मानसिक उन्नति प्रदान कर श्रेष्ठता से परिपूर्ण किया जायेगा। इसके अन्तर्गत नशा विरोधी अभियान, आपसी भाई चारा स्थापित करने का अभियान, मताधिकार के लिये जागृति, व्यभिचार, भ्रष्टाचार के विरुद्ध जागृति, ऊर्जा संरक्षण, जल संरक्षण के प्रति जागृति, पर्यावरण प्रदूषण दूर करने सम्बन्धी जागृति, जीवन में योग एवं अध्यात्म के समावेश हेतु जागृति के कार्यक्रम लगातार संचालित किये जाते रहेंगे।

.... 2

संस्था द्वारा संचालित किये जाने वाले शोध केन्द्र पर नियमित पूर्णकालिक स्टाफ की नियुक्ति की जायेगी तथा आवश्यक संसाधन उपलब्ध कराये जायेंगे। केन्द्र कम्प्यूटर/इण्टरनेट के माध्यम से मुख्यालय द्वारा जुड़े रहेंगे एवं प्रतिदिन की गतिविधियों को अवगत कराते रहेंगे। सभी का औचक निरीक्षण भी किया जायेगा। विशिष्ट लोगों को समय–समय पर पुरस्कृत किया जायेगा। ऐसे अवसर पर देश के राष्ट्रपति, प्रधान मन्त्री, मन्त्रीगण तथा देश–विदेश के अन्य सम्मानित गणमान्य व्यक्तियों को आमन्त्रित किया जायेगा।

परियोजना की समस्त जानकारी संस्था द्वारा अपनी वेवसाइट बनाकर सभी के लिये प्रदान की जायेगी। धीरे–धीरे संस्था द्वारा इस प्रकार के शोध केन्द्र पूरे देश में जन–सहयोग से स्थापित करने का लक्ष्य निर्धारित है।

(मुरलीधर गौड़)